पेड़ों के दर्द से जोड़ लिया रिश्ता

कल्पना आनंद बिष्ट, बाहरी दिल्ली

राष्ट्र को मजबूत करने व प्रगति के पथ पर ले जाने की सोच ही नहीं, वरन मन में पक्के इरादे व बुलंद हौंसले का होना भी जरूरी है। इसी इच्छाशक्ति के साथ देश में कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो अकेले ही दुनिया को रोशन करने निकले थे। उनकी काबलियत, मेहनत व दृढ़ इच्छाशक्ति के चलते सफलता ने उनके कदम चूमे और उनके कार्य का तेज वास्तव में दुनिया को रोशन कर रहा है।

वर्ष 2007 में दिल्ली विश्वविद्यालय के नार्थ कैंपस में कई पेड़ों की छाल निकालकर उनमें नंबरिंग की गई। इससे पेड़ों को नुकसान पहुंचने के साथ ही उनकी जीवनलीला ही समाप्त हो गई थी। दिल्ली विश्वविद्यालय के ही पर्यावरण विज्ञान के छात्र गोविंद ने जब यह देखा तो उन्हें बहुत बुरा लगा। बस तभी से उन्होंने शुरुआत की पेड़ बचाओ व दिल्ली ग्रीन मूवमेंट की। गोविंद के समर्थन में दिल्ली विश्वविद्यालय, इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र एकजुट हुए और कैंपस व राजधानी को हराभरा रखने का संकल्प लिया। दिल्ली ग्रीन मूवमेंट के लगातार प्रयासों का ही परिणाम है कि अब पेड़ों की छाल निकालकर उनमें नंबरिंग करने की बजाय पेंट के माध्यम से नंबर लिखे जाते हैं। गोविंद की पर्यावरण बचाओ मुहिम में अब राजधानी ही नहीं, बल्कि देशभर से विभिन्न विश्वविद्यालयों व संगठनों के छात्र-छात्राएं व कार्यकर्ता जुड़ रहे हैं। वर्ष-2008 में ही उनकी संस्था ने क्लाइमेट चेंज मुद्दे पर सम्मेलन का आयोजन किया। गोविंद का मकसद पर्यावरण संरक्षण को देशव्यापी मुहिम बनाना है। अब वह अरबन इकोटूरिज्म के माध्यम से राजधानी की डीटीसी बसों में लोगों को ऐतिहासिक महत्व की इमारतें दिखाने के साथ उनका संरक्षण करना भी बताएंगे।

दिल्ली ग्रीन संस्था के कार्यकर्ता। जागरण

खिलाड़ी खोज कर रहे पदक के लिए तैयार

खिलाड़ियों को ढूंढकर उन्हें आगे लाने व उनके जरिये देश की झोली में पदक डालने के संकल्प से लबरेज हैं लक्ष्मण भंडारी। वह पिछले डेढ़ दशक से आर्थिक रूप से कमजोर व पिछड़े बच्चों को आर्म रेसलिंग (पंजा लड़ाने) की न केवल निशुल्क कोचिंग दे रहे हैं, बल्कि उन्हें टूर्नामेंट में ले जाने का खर्च भी खुद ही उठा रहे हैं। वर्ष 1995 में ही रॉयल स्पोर्ट्स क्लब की स्थापना के साथ ही उन्होंने आर्म रेसलिंग में बेहतर प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं की खोज शुरू कर दी। अब तक लगभग 1200 से अधिक लोग उनसे आर्म रेसलिंग की कोचिंग लेकर खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। वह आम लोगों में भी इस खेल का प्रसार करने में जुटे हैं।

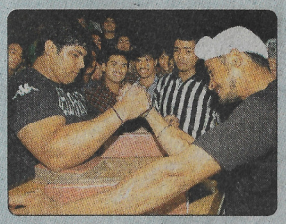

आर्म रेसलिंग सिखाते लक्ष्मण भंडारी।

नेत्रहीनों को बना रहे आत्मनिर्भर

लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में लगातार 24 घंटे आंखों में पट्टी बांधकर 525 महिलाओं के बाल काटने का रिकॉर्ड बना चुके मशहूर हेयर स्टाइलिस्ट रमजान अली नेत्रहीन युवक-युवतियों को हेयर कटिंग व हेयर स्टाइल का प्रशिक्षण दे रहे हैं। कटिंग के साथ उन्हें वह वजीफा भी देते हैं। उनका कहना है कि नेत्रहीन व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का उन्होंने संकल्प लिया है।

हेयर स्टाइलिस्ट रमजान अली। जागरण